वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 237

गणिनी ज्ञानमती महापूजा

–रचयित्री–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती वर्ष (अप्रैल 2006-अप्रैल 2007) के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 280236

द्वितीय संस्करण	माघ कृ. 14, वीर नि. सं. 2533	मूल्य
3300 प्रतियाँ	18 जनवरी 2007	12.00 रु.

भगवान ऋषभदेव मोक्षकल्याणक दिवस

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण, सन् 2004–2200 प्रतियाँ प्रकाशित

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी वर्तमान में जनमानस के लिए चिरपरिचित व्यक्तित्व हैं, जो नारीजगत के लिए ही नहीं प्रत्युत् समस्त साधुवर्ग तथा विद्वानों के लिए भी ज्ञानक्षेत्र में आज एक चुनौती बन गई हैं। उन्होंने जहाँ एक ओर बालकवर्ग के लिए बालविकास जैसे सरलतम लघु पुस्तकों की रचना की, वहीं विद्वानों के लिए क्लिष्टतम अनेक महान ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद किया है। जहाँ उन्होंने अनेकों विधानों की रचना कर भक्तिगंगा का स्रोत प्रवाहित किया, वहीं षट्खण्डागम जैसे महान सिद्धान्तग्रंथ की संस्कृत टीका कर रही हैं। जहां उन्होंने राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों द्वारा जैनधर्म की कीर्तिपताका को दिग्दिगन्त फहराया, वहीं चौबीसों तीर्थंकरों की जन्मभूमियों के विकास, संरक्षण व संवर्द्धन का बिगुल बजाया है। इन सभी कार्यों के मध्य उन्होंने अपनी आगमोक्त चर्या का निराबाध पालन किया जो कि वर्तमान साधुवर्ग के लिए अनुकरणीय उदाहरण है। उनके इस व्यक्तित्व एवं कृतित्व के प्रति यह विश्व युगों-युगों तक चिरऋणी रहेगा।

उन्हीं पूज्य माताजी के श्रीचरणों में अपनी भक्ति सुमनावली प्रकट करते हुए संघस्थ पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने पूज्य माताजी के जीवन के विभिन्न पहलुओं का परिज्ञान करवाते हुए 'गणिनी ज्ञानमती महापूजा'' नामक सारभूत कृति की रचना की है। साथ ही अन्य सुन्दर रचनाएँ भी इसमें हैं, जिसे पढ़कर निश्चित ही भौतिक सुखाभिलाषी मनुष्य कुछ क्षण के लिए स्वयं में वैराग्य भाव को प्रस्फुटित हुआ पायेगा।

आर्यिका श्री चंदनामती माताजी सिद्धहस्त लेखिका हैं, उनके द्वारा अब तक अनेकों पुस्तकों का लेखन हुआ है, जिससे समाज में न सिर्फ जागृति ही आयी है अपितु लोगों ने सरल भाषा में जैनधर्म के वास्तविक स्वरूप को समझा है। इसी क्रम में उनके द्वारा लिखित गुरुभक्ति की अनूठी कृति इस महापूजा के माध्यम से आप सब गुरुभक्ति करते हुए पूज्य माताजी के पदचिन्हों पर चलकर अपने जीवन का कल्याण करें, यही मंगल भावना है।

दीर्घकालीन तपस्या से अर्जित किया है पुण्य ज्ञानमती माताजी ने

प्रस्तुति-आर्यिका चंदनामती

जब किसी जिन प्रतिमा का दर्शन किया जाता है तो उसकी प्राचीनता ज्ञात होने पर दर्शन करने वाले श्रद्धालु भक्त की भक्ति कुछ विशेष ही हो जाती है, यह सर्वमान्य तथ्य है। वास्तविकता यह है कि जिनप्रतिमा जितनी प्राचीन होती है, उसकी भक्तिभावपूर्वक दर्शन-वंदना करने से उतना ही अधिक फल प्राप्त होता है। वर्तमान काल में यही सत्य हमारे सामने साकाररूप ले रहा है पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के रूप में। 18 वर्ष की अल्प आयु में घर का त्याग कर युग की प्रथम बालब्रह्मचारिणी के रूप में त्यागमार्ग में कदम बढ़ाने वाली इस लौह-बाला ने त्यागमयी जीवन के जो 52 वर्ष पूर्ण किए हैं उनसे एक विशेष प्रकार का अतिशय उनमें उत्पन्न हो गया है। पूज्य माताजी के अनेक कार्यकलापों को देखकर लोग अक्सर कहा करते हैं कि माताजी तो महान पुण्यशालिनी हैं और उस पुण्य के बल पर ही उनके द्वारा इतने बड़े-बड़े कार्य सम्पन्न हो रहे हैं, परन्तु वास्तव में पुण्य कहीं बाजार में नहीं मिलता है और न ही किसी दुकान से खरीदा जा सकता है। पूज्य माताजी ने भी यह अपार पुण्य किसी से उधार नहीं लिया है वरन् इन 52 वर्षों में एक-एक क्षण करके घट में बूँद-बूँद की भाँति उसे अर्जित किया है। ज्ञातव्य है कि सन् 1934 की शरदपूर्णिमा को टिकैतनगर (बाराबंकी-उ.प्र.) में पिता श्री छोटेलाल जी एवं माता मोहिनी देवी से जन्मी प्रथम कन्यारत्न मैना ने सन् 1952 में गृहत्याग कर आजन्म ब्रह्मचर्य एवं सप्तम प्रतिमा के व्रत धारण किए। पुनः 1953 में क्षुल्लिका दीक्षा तथा 1956 में आर्यिका दीक्षा धारण कर '**ज्ञानमती**' नाम प्राप्त किया।

अखण्ड असिधारा व्रत की स्वर्णिम धारा (52 वर्ष), महाव्रतों को पालन करने की सूक्ष्म चर्या, मोक्षमार्ग के प्रणेता भगवान जिनेन्द्र के प्रति उनके कण-कण में व्याप्त अनुपमेय अपार भक्ति, प्रतिक्षण स्व एवं पर के कल्याण हेतु अटूट परिश्रम के महायज्ञ में समर्पण उनके इस महान पुण्यरूपी प्रासाद के सुदृढ़ स्तम्भ बने हैं।

किन्हीं नीतिकार का कथन पूर्ण सत्य है-

पुण्यस्य फलमिच्छंति, पुण्यं नेच्छन्ति मानवाः।
न पापफलमिच्छंति, पापं कुर्वन्ति यत्नतः॥

अर्थात् लोग पुण्य से प्रसूत सुखरूप फल की इच्छा करते हैं, परन्तु पुण्य करना नहीं चाहते हैं। वे पापरूप फल को नहीं चाहते हैं परन्तु पाप के संचय में (सदैव) प्रयत्नशील रहते हैं।

देखा जाये तो संसार में यही स्थिति बनी हुई है, लोग समस्त सुख-सम्पत्ति-वैभव के आधारभूत पुण्य क्रियाओं से तो अछूते बने रहते हैं और अपने जीवन में सदैव ऊँचाईयों की अभिलाषा से त्रस्त रहा करते हैं। ऐसे लोगों के लिए पूज्य माताजी का जीवन विशेषरूप से प्रेरणास्पद है।

पूज्य माताजी जिस तीर्थ को छूती हैं, वह आकाश की ऊँचाईयों को छूने लगता है, जिस

मिट्टी को छूती हैं, वह सोना बन जाती है, जिस जंगल में पहुँच जाती हैं, वहाँ स्वर्ग बन जाता है, जिस ग्राम की धरती पर चरण रखती हैं, वह मंदिर बन जाता है, जिस व्यक्ति पर उनकी दृष्टि पड़ जाती है, वह अपने जीवन में इंसान से भगवान बनने की ओर अग्रसर हो जाता है और जिस बिन्दु का वह स्पर्श करती हैं, वह सिंधु बनने के लिए चयनित हो जाता है।

यही कारण है कि भगवान महावीर की जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) में मात्र एक वर्ष में हुए विशाल निर्माणकार्य को देखकर लोगों के मुख से सहसा निकलता है कि बीसों वर्ष का कार्य मानो स्वयं देवों ने आकर इतने अल्प समय में साकार कर दिया है। वस्तुतः देवोपुनीत इस कार्य को देखकर लोग आश्चर्य से दाँतों तले अगुँली दबा लेते हैं। पूज्य माताजी के साथ जुड़ने वाले भक्तों का समर्पण भी इसीलिए रहता है

क्योंकि वह मात्र मंदिर या तीर्थ नहीं बना रही हैं वरन् जैन शासन की प्राचीन संस्कृति एवं अतिप्राचीन इतिहास की सुरक्षा में आचार्य कुन्दकुन्द एवं अकलंक देव जैसे उदाहरण प्रस्तुत कर रही हैं। साररूप में यदि कहा जाये तो उनके द्वारा विशाल साहित्य सृजन, हस्तिनापुर-अयोध्या-मांगीतुंगी-अहिच्छत्र-प्रयाग-कुण्डलपुर जैसे अनेकानेक तीर्थों का जीर्णोद्धार एवं विकास, जैन धर्म की प्राचीनता को जन-जन तक पहुँचाने के लिए किए गए महान प्रभावनात्मक कार्य जिनेन्द्र भगवान, जिनशासन एवं जिनवाणी के प्रति उनकी अटूट भक्ति एवं समर्पण के ही प्रतीक हैं। प्रारंभ से ही जिनशासन को अपना सर्वस्व मानने वाली पूज्य माताजी ने अपना हर कदम आगमानुकूल एवं अपने मोक्षमार्ग को प्रशस्त करने के लिए बढ़ाया है। प्रतिदिन उनके मुख से यही निकला करता है कि हे भगवन्! यदि मेरे द्वारा किंचित् भी आपके प्रति भक्ति एवं गुणानुरागरूप क्रियाएँ सम्पन्न हो रही हैं, तो उनके पीछे मेरा एकमात्र यही स्वार्थ निहित है कि आने वाले कुछ ही भवों में मैं इस प्रकार की उच्चतम साधना एवं ध्यानाग्नि का प्रश्रय ले सकूँ कि मेरे समस्त कर्म मलों की शृँखला चूर-चूर होकर मेरी शुद्ध चेतनस्वरूप आत्मा को मोक्ष की प्राप्ति हो सके।

तीर्थंकर भगवन्तों एवं आगम में वर्णित मोक्ष पथ की वर्तमानकालीन साधना के प्रति उनकी अतिशय भक्ति का ही यह परिणाम है कि तीर्थंकर भगवन्तों के पंचकल्याणकों की भूमियों विशेषरूप से संस्कृति की उद्गमस्थल-जन्मभूमियों के संरक्षण एवं विकास के प्रति उनके हृदय में विशेष संकल्प बना हुआ है। पाँच तीर्थंकरों की जन्मभूमि शाश्वत तीर्थ अयोध्या, तीन तीर्थंकरों की जन्मभूमि हस्तिनापुर, भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि राजगृही एवं भगवान महावीर स्वामी की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में जो विकास पूज्य माताजी की प्रेरणा से सम्पन्न हुआ है, वह भला किसकी नजरों से छिपा है। उनकी कर्मठता एवं संकल्पशक्ति के विषय में समाज को पूर्ण विश्वास है कि जिस कार्य को माताजी हाथ में लेंगी, वह निश्चित रूप से बहुत ही सुन्दर एवं व्यवस्थित रूप में अल्प समय में ही पूर्ण हो जायेगा, इसीलिए पूज्य माताजी के आह्वान पर समाज भी हृदय से उस उद्देश्यात्मक कार्य के प्रति समर्पित हो जाता है।

पूज्य माताजी के चरण- कमलों में बारम्बार अभिवंदन करते हुए जिनेन्द्र प्रभु से यही हार्दिक प्रार्थना है कि यह पुण्यधारा निरन्तर यूँ हीं हम सबको सराबोर करती रहे।

विधान की रचयित्री
पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी का
संक्षिप्त परिचय

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

जन्म	—	१८ मई, सन् १९५८, ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या वी.नि. सं. २४८४
जन्मस्थान	—	टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.
जन्मनाम	—	कु. माधुरी जैन
माता-पिता	—	श्रीमती मोहिनी जैन एवं श्री छोटेलाल जैन
लौकिक शिक्षा	—	हाईस्कूल
धार्मिक अध्ययन	—	शास्त्री, विद्यावाचस्पति आदि
आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत	—	सन् १९७१, अजमेर (राज.) में सुगंधदशमी के दिन पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी से
दो प्रतिमा के व्रत	—	सन् १९८२, मोरीगेट दिल्ली में चातुर्मास के मध्य
सप्तम प्रतिमा	—	मार्च सन् १९८७ में
आर्यिका दीक्षा	—	१३ अगस्त, सन् १९८९ रविवार,श्रावण शुक्ला ग्यारस को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के करकमलों से।
कार्यकलाप	—	१८ वर्ष तक पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की छत्रछाया में गुरु वैयावृत्ति एवं स्वाध्याय, चिन्तन, मनन, तपश्चरण एवं धर्मप्रवचन, अध्ययन आदि के साथ ही साथ सतत् ग्रंथों का सम्पादन एवं साहित्य लेखन।

वर्तमान में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखित षट्खंडागम ग्रंथ की संस्कृत टीका का हिन्दी अनुवाद तथा गुरु संघ के साथ अनेक ग्राम, नगर एवं तीर्थक्षेत्रों पर विहार करते हुए अपने हित-मित-प्रिय वचनामृत से जन- कल्याण में निरत और साधना की उच्च सीढ़ियों पर सतत आरोहण।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान का परिचय

-पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

जिस हस्तिनापुर में इस संस्थान द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर कार्य कलाप चल रहे हैं, प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की पारणा, कौरव-पाण्डव की राजधानी, दर्शन प्रतिज्ञा में प्रसिद्ध मनोवती का इतिहास आदि पौराणिक कथानकों से जुड़ी वह हस्तिनापुर एक ऐतिहासिक एवं पौराणिक नगरी है। सन् १९७२ में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान दिल्ली से इस संस्था का जन्म हुआ।

सन् १९७५ से हस्तिनापुर में निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया अब तक वहाँ अनेक भव्य रचनाएँ, कमरे, फ्लैट, कोठियां आदि बन चुके हैं, निर्माण के अतिरिक्त संस्थान के द्वारा शिक्षा एवं धर्म प्रचार-प्रसार हेतु शिक्षण शिविर, सेमिनार, अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार, सम्मेलन आदि के आयोजन होते रहते हैं। पूज्य माताजी द्वारा लिखित चारों अनुयोगों एवं धर्मप्रभावना के समाचारों से सहित सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका का प्रकाशन २५ वर्षों से निराबाध गति से चल रहा है। सन् १९७४ में स्थापित संस्थान के अन्तर्गत वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला से २५० से भी अधिक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। यहाँ आचार्य श्री वीरसागर विद्यापीठ, जम्बूद्वीप पारमार्थिक औषधालय, जम्बूद्वीप पुस्तकालय, णमोकार महामंत्र बैंक आदि के अन्तर्गत सभी धार्मिक शैक्षणिक कार्यक्रम चलते हैं। सन् १९७५ में प्रारंभ पंचकल्याणकों में अब तक पाँच पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं एवं प्रति ५ वर्षों में होने वाले जम्बूद्वीप महामहोत्सव में से ३ महोत्सव हो चुके हैं। इस संस्थान द्वारा जहाँ पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् १९८२ में दिल्ली से स्व. प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरागांधी द्वारा उद्घाटित ज्ञानज्योति रथ का १०४५ दिनों तक सम्पूर्ण भारत में भ्रमण एवं हस्तिनापुर में उसकी अखण्ड स्थापना हुई वहीं प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उद्घाटित भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ ने सम्पूर्णभारत में भ्रमण कर जैनधर्म की प्राचीनता, अहिंसा-शाकाहार एवं २४ तीर्थंकरों के अहिंसामयी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया। वर्तमान में इसी संस्थान के द्वारा भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर की वास्तविकता से परिचित कराने हेतु "महावीर ज्योति" रथ का प्रवर्तन सम्पूर्ण भारत में चल रहा है। जम्बूद्वीप स्थल पर भव्य दीक्षाएं भी हुई हैं। इसी संस्थान द्वारा दिल्ली के लालकिला मैदान से ४ फरवरी सन् २००० को वर्तमान प्रधानमंत्री द्वारा उद्घाटित "भगवान ऋषभदेव अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव" सम्पूर्ण देश एवं विदेशों में मनाया गया। जिसके अन्तर्गत अनेक संगोष्ठियाँ, भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ रचना आदि कार्यक्रम हुए। इसमें संस्थान द्वारा पूज्य माताजी की प्रेरणा से प्रयाग तीर्थ क्षेत्र "तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली" एवं भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में 'नंद्यावर्त महल परिसर' नामक तीर्थ का निर्माणकार्य सम्पन्न हुआ है।

इस प्रकार से दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान चतुर्मुखी योजनाओं से समाज को सदैव लाभान्वित करता रहे यही मंगल कामना है।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-जहाँ डाल-डाल पर .....

श्री ज्ञानमती माताजी को हमने तीर्थ बनाते देखा,
ये हैं इतिहास प्रणेता।।टेक.।।

पहले खुद चेतन तीर्थ बनीं, फिर तीर्थोद्धार कराया।
हस्तिनापुरी में जम्बूद्वीप का, अतिशय क्षेत्र बनाया।।
अतिशय.....

फिर तीर्थ अयोध्या मांगीतुंगी, को भी सजाते देखा,
ये हैं इतिहास प्रणेता।।१।।

प्रभु ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव वर्ष अमर हुआ जग में।
जब तीर्थ प्रयाग का फिर से परिचय पाया है नव युग ने।।
पाया है.....

महाकुंभ में पहली बार जैन संस्कृति निर्माण है देखा,
ये हैं इतिहास प्रणेता।।२।।

इस तीर्थ प्रणेत्री माता का यश युग-युग अमर रहेगा।
''चन्दनामती'' हर कवि उनका पावन यशगान करेगा।।
पावन यशगान.....

इस पुण्य से इनको तीर्थंकर पद निश्चित शीघ्र मिलेगा,
ये हैं इतिहास प्रणेता।।३।।

G

गणिनी ज्ञानमती महापूजा

मंगलाचरण

गणिन्नीज्ञानमतीस्तवनम्

शार्दूलविक्रीडित छन्द–

यज्ज्ञानं च भवाब्धितीरतरणे नौकासमं वर्त्तते।
यद्वाणी शुभमानसाम्बुजरविर्शास्त्रार्थसम्बोधिनी।।
यत्कीर्तिः खलु दिक्षु विस्तृततरा चन्द्रोज्ज्वला शर्मदा।
वन्देऽहं स्वात्मैकसाधनरतां श्रीज्ञानमत्यार्यिकाम् ।।१।।

यस्याः शान्तिरनल्पकोपशमने धैर्यं वरं सौख्यकृत्।
नानाग्रन्थसुरत्नवृन्दरचितं सद्बोधिरत्नप्रदम् ।।
दुर्दान्तप्रतिवादिवादनिपुणा गणिनीपदालंकृता।
वन्देऽहं स्वात्मैकसाधनरतांश्रीज्ञानमत्यार्यिकाम् ।।२।।

नाना तर्कपरायणा गुणयुता लावण्यपूर्णामुखा।
न्यायव्याकरणादिग्रन्थरचना नैपुण्यसिद्धा वरा।।
तीर्थोद्धारधुरन्धरा मतिवरा वात्सल्यरत्नाकरा।
वन्देऽहं स्वात्मैकसाधनरतां श्रीज्ञानमत्यार्यिकाम् ।।३।।

वैराग्यद्रुमवर्धने जलधरा साध्वी सभाग्रेसरा।
शिष्याणामुपकारकार्यकुशला सिद्धान्तपारंगता।।
सम्यग्दर्शन ज्ञानचक्रसहिता सद्ब्रह्मचर्यार्चिता।
वन्देऽहं स्वात्मैकसाधनरतां श्रीज्ञानमत्यार्यिकाम् ।।४।।

छोटेलाल इति श्रुतस्सुजनको यस्यास्ति धर्मोद्यतः।
गार्हस्थ्ये कुशला सतीगुणयुता माता मता मोहिनी।।
आर्या रत्नमती प्रसिद्धनाम्ना यज्जन्मदात्री सती।
वन्देऽहं स्वात्मैकसाधनरतां श्रीज्ञानमत्यार्यिकाम् ।।५।।
यन्नामस्मरणं प्रकाशकरणं बोधिं समाधिप्रदम् ।
भव्यानां सकलार्थसिद्धिसदनं संसारपापापहम् ।।
अज्ञानानलदाहशान्तिसलिलं यद्दर्शनं शर्मदं।
वन्देऽहं स्वात्मैकसाधनरतां श्रीज्ञानमत्यार्यिकाम् ।।६।।

जम्बूद्वीपकृतिः सुनिर्मितवती यस्या समालम्बने।
यस्याः प्रेरणया हि ज्योतिःप्रभा ज्ञानस्य संचारिणी।।
गणिनी ज्ञानमती सुभारतमणिः चारित्रचक्रेश्वरी।
वन्देऽहं स्वात्मैकसाधनरतां श्रीज्ञानमत्यार्यिकाम् ।।७।।

सम्प्रत्यस्ति न शान्तिसागरमुनिः चारित्रचक्रीगुरुः।
तद्वाचः शुभमासतेऽत्र गणिनीमातुः प्रयासेन च।।
या रत्नत्रयधारिणी श्रुतवरा तस्याः समालम्बने।
वन्देऽहं स्वात्मैकसाधनरतां श्रीज्ञानमत्यार्यिकाम् ।।८।।

अनुष्टुप छंद

ज्ञानमत्यार्यिका माता, जीयात् वर्ष शतं भुवि।
चन्दनामतिशिष्यायाः, पूर्यात् सर्वं मनोरथं।।

अथ गणिनी ज्ञानमती महापूजा प्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन

स्थापना

पूजन करो जी-

श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की, पूजन करो जी।
जिनकी पूजन करने से, अज्ञान तिमिर नश जाता है।
जिनकी दिव्य देशना से, शुभ ज्ञान हृदय बस जाता है।।
उनके श्री चरणों में, आह्वानन स्थापन करते हैं।
सन्निधिकरण विधीपूर्वक, पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।।
पुष्पांजलि अर्पित करते हैं.....

पूजन करो जी,

श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की पूजन करो जी।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अष्टक

ज्ञानमती जी नाम तुम्हारा, ज्ञान सरित अवगाहन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।
मुझ अज्ञानी ने माँ जबसे, तेरी छाया पाई है।
तब से दुनिया की कोई छवि, मुझको लुभा न पाई है।।
ज्ञानामृत जल पीने हेतू, तव पद में मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।१।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन और सुगंधित गंधों, की वसुधा पर कमी नहीं।
लेकिन तेरी ज्ञान सुगन्धी, से सुरभित है आज मही।।
उसी ज्ञान की सौरभ लेने, को आतुर मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।२।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के नश्वर वैभव से, मैंने शाश्वत सुख था चाहा।
पर तेरे उपदेशों से, वैराग्य हृदय मेरे भाया।।
अक्षय सुख के लिए मुझे, तेरा प्रवचन ही साधन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।३।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने निज बाणों से, जब युग को था ग्रसित किया।
तुमने अपनी कोमल काया, लघुवय में ही तपा दिया।।
इसीलिए तव पद में आकर, शान्त हुआ मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।४।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मानव सुन्दर पकवानों से, अपनी क्षुधा मिटाते हैं।
लेकिन उनके द्वारा भी नहिं, भूख मिटा वे पाते हैं।।
आत्मा की संतृप्ति हेतु, तव वाणी मेरा भोजन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।५।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत के दीपों से जग ने, गृह अंधेर मिटाया है।
ज्ञान का दीपक लेकर तुमने, अन्तरंग चमकाया है।।
घृत का दीपक लेकर माता, हम करते तव प्रणमन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।६।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने ही अब तक मुझको, यह भव भ्रमण कराया है।
तुमने उन कर्मों से लड़कर, त्याग मार्ग अपनाया है।।
धूप जलाकर तेरे सम्मुख, हम करते तव पूजन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।७।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कितने खट्टे मीठे फल को, मैंने अब तक खाया है।
तुमने माँ जिनवाणी का, अनमोल ज्ञानफल खाया है।।
तव पूजनफल ज्ञाननिधी, मिल जावे यह मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।८।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पिच्छि कमण्डलुधारी माता, नमन तुम्हें हम करते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, अर्घ्य समर्पण करते हैं।।
युग की पहली ज्ञानमती के, चरणों में अभिवन्दन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।९।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेरछंद

हे माँ तू ज्ञान गंग की पवित्र धार है।
तेरे समक्ष गंगा की लहरें बेकार हैं।।
उस धार की कुछ बूँदों से जलधार मैं करूँ।
वह ज्ञान नीर मैं हृदय के पात्र में भरूँ।।

शांतये शांतिधारा.....।।

स्याद्वाद अनेकान्त के उद्यान में माता।
बहुविध के पुष्प खिले तेरे ज्ञान में माता।।
कतिपय उन्हीं पुष्पों से मैं पुष्पांजलि करूँ।
उस ज्ञानवाटिका में ज्ञान की कली बनूँ।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्.....।।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

ॐ ज्ञानमती माताजी को है, मेरा बारम्बार नमन।
निज नाम किया साकार उन्हीं के, चरणों में शत शत वंदन।।
गंगा की निर्मलधारा से, जिनका अन्तर्मन है पावन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती! स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।१।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमत्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ अट्ठाईस मूलगुण युत, उपचार महाव्रति को वन्दन।
आर्यिका एक साटिका धारिणी, की मुद्रा को करूँ नमन।।
लज्जादिक गुण से भूषित ब्राह्मी, के पथ को कर दिया चमन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।२।।

ॐ ह्रीं श्री आर्यिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ छत्तिस मूलगुणों से युत, गणिनी माता को करूँ नमन।
आचार्य सदृश शिष्याओं को, दीक्षा देने में जो सक्षम।।
निज संघ बढ़ाकर वत्सलता, अनुशासन गुण का करें कथन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।३।।
ॐ ह्रीं श्री गणिन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ कन्या दीक्षा लेकर जगमाता बन गई उसे वन्दन।
जिनधर्म सदा इसकी महिमा का, करता है सुन्दर वर्णन।।
जिनकी दृष्टि में पुत्र सदृश, आलोकित होते हैं जन-जन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।४।।
ॐ ह्रीं श्री जगन्मात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ तेरह विध चारित्रचन्द्रमा, की किरणों को करूँ नमन।
शीतलता गुण से व्याप्त उन्हीं, चारित्रचन्द्रिका को वन्दन।।
इस बाह्य उपाधी से अन्तर में, जला ज्ञान का दीप प्रबल।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।५।।
ॐ ह्रीं श्री चारित्रचन्द्रिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ सदी बीसवीं में पहली, युगप्रवर्तिका को करूँ नमन।
उस पथ पर चलने वाली सभी, आर्यिकाओं को भी वंदन।।
इस पदवी को सार्थक करने में, हुआ तुम्हारा सार्थक श्रम।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।६।।
ॐ ह्रीं श्री युगप्रवर्तिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ बाल्यावस्था से ही ब्रह्मचर्यव्रतधारी को वन्दन।
पञ्चेन्द्रिय विषय कथाओं का नहिं, किया कभी अनुभव चिन्तन।।
ये तो भव भव में मिलती हैं, ऐसा सोचा तज दिया स्वजन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।७।।
ॐ ह्रीं श्री बालब्रह्मचारिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ महावीर जी तीरथ पर, जो बनीं वीरमति उन्हें नमन।
क्षुल्लिका अवस्था में भी अपना, खूब बढ़ाया ज्ञानार्जन।।
चारित्रचक्रवर्ती गुरु से, शिक्षा ली उनके कर दर्शन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।८।।
ॐ ह्रीं श्री वीरमत्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ कंठ और कर में जिनके, जिनवाणी उनको सदा नमन।
शारद माता की प्रतीकृती, माँ सरस्वती को नित वंदन।।
स्वर की वीणा प्रभु की माला, हंसासन इनका पद्मासन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।९।।
ॐ ह्रीं श्री सरस्वत्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ तीर्थंकर की जन्मभूमियों, की उद्धारक मात नमन।
मांगीतुंगी हस्तिनापुरी, अरु तीर्थ अयोध्या हुआ चमन।।
कितने ही तीर्थों का विकास कर, उन्हें किया नवकृति अर्पण।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।१०।।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थोद्धारिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ सहधर्मी के प्रति वत्सलता, गुणयुत माता को वन्दन।
गौ माता सम तुम नयनों में, दिखता है प्रेमभरा उपवन।।
इस वत्सलता की सरिता में ही, डूब रहे संसारी जन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।११।।
ॐ ह्रीं श्री वात्सल्यमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ बारह तप-दश धर्म आदि, छत्तिस गुणधारी को वन्दन।
आचार पाँच छह आवश्यक, त्रयगुप्ती का उपचार कथन।।
सूरी सम ये गणिनी में भी, प्रगटित होते हैं छत्तिस गुण।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।१२।।
ॐ ह्रीं श्री उपचारषट्त्रिंशत्मूलगुणधारिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ध्यान योग से युक्त ज्ञानमति, माता को मैं करूँ नमन।
सन् पैंसठ में उस ध्यान से पाया, जम्बूद्वीप बना उत्तम।।
प्रभु गोमटेश के चरणों में, पिण्डस्थ ध्यान को किया ग्रहण।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।१३।।
ॐ ह्रीं श्री पिण्डस्थध्यानसंयुक्तायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ चलती फिरती ज्ञान विश्वविद्यालय माता को वन्दन।
अपने अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग से, लिखे सैकड़ों ग्रन्थ प्रथम।।
ज्ञानामृत वर्षा के द्वारा, करतीं निज पर को सदा प्रसन्न।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।१४।।
ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोगयुक्तायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ तीर्थ हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचाया उन्हें नमन।
जहाँ देश विदेशों के यात्री, आ श्रद्धा से करते वन्दन।।
धरती पर पहली बार जैन, भूगोल कराया दिग्दर्शन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।१५।।
ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपप्रेरिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ज्ञानज्योति रथ की पावन, प्रेरिका मात को करूँ नमन।
इन्द्रागाँधी ने किया प्रवर्तन, तुम चरणों में कर वन्दन।।
भारत के कोने कोने में, ज्योती ने किया धर्मवर्तन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।१६।।
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानज्योतिप्रवर्तिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ विद्याओं में पारंगत, परमार्थ ज्ञानयुत तुम्हें नमन।
मुनि और आर्यिकाओं शिष्यों को, खूब पढ़ाया तुम्हें नमन।।
इस भव का विद्यादान तुम्हारा, बना सभी का ज्ञान सदन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।१७।।
ॐ ह्रीं श्री विधानवाचस्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ डी. लिट्. की यह पदवी युत, साहित्यवारिधी तुम्हें नमन।
जब अवध विश्वविद्यालय के, कुलपति ने किया तुम्हें अर्पण।।
वहाँ ऋषभदेव की शोधपीठ है, इसी प्रेरणा का उपवन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।१८।।
ॐ ह्रीं श्री साहित्यवारिधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ रत्नत्रय आभूषण से, भूषित माता को सदा नमन।
पंचम गुणथान के योग्य देश, रत्नत्रय युत माँ को वंदन।।
आत्मा तो स्त्री-पुरुष आदि, वेदों से विरहित सुखी परम।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।१९।।
ॐ ह्रीं श्री रत्नत्रयधारिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ कुन्दकुन्द की वाणी में, उपचार महाव्रति को वन्दन।
लज्जा शीलादि गुणों से युत, आर्यिका परमपद को वन्दन।।
गणिनी सुलोचना सम तुमको भी, मिले अंग का ज्ञान सुगम।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।२०।।
ॐ ह्रीं श्री उपचारमहाव्रतिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ वीरप्रभू के बाद प्रथम, इतिहास रचा माँ तुम्हें नमन।
ग्रन्थों की रचना करने वाली, पहली साध्वी को वन्दन।।
फिर तो अनेक माताओं ने भी, किये ग्रन्थ के शुभ लेखन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।२१।।
ॐ ह्रीं श्री प्रथमग्रंथरचनाकर्त्र्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ अष्टसहस्त्री का हिन्दी, अनुवाद किया माँ तुम्हें नमन।
सर्वोच्च न्याय का ग्रन्थ जिसे, कहते हैं कष्टसहस्त्री हम।।
सन् उन्निस सौ उनहत्तर सत्तर, में वह ग्रन्थ हुआ पूरण।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।२२।।
ॐ ह्रीं श्री अष्टसहस्त्रीअनुवादिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ज्ञान ध्यान गुण युक्त साधुगुणधारी माता को वन्दन।
उनके द्वारा उपलब्ध अनेकों, नवनिर्माणों को वन्दन।।
नारी की कोमल काया को, कर लिया तपस्या से चन्दन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।२३।।
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानध्यानसमन्वितायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ जग के दिशाभ्रमित जीवों को, मार्ग बतातीं उन्हें नमन।
हो खानपान अरु खानदान की, शुद्धि कहें ये आर्षवचन।।
करतीं प्रभावना हैं लेकिन, आगमविरुद्धता नहीं सहन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।२४।।
ॐ ह्रीं श्री सन्मार्गदर्शिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ब्राह्मी का पथ बतलाने, वाली माता को है वन्दन।
इस शान्ति सिन्धु के हीरे की, चैतन्य प्रभा को सदा नमन।।
नारी स्वतंत्रता का झण्डा, लेकर चल पड़ीं स्वयं ही तुम।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।२५।।
ॐ ह्रीं श्री ब्राह्मीपथप्रदर्शिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ प्रातः से संध्या तक अपनी, क्रिया करें जो उन्हें नमन।
अट्ठाइस कायोत्सर्गों में जो, सदा सजग उनको वंदन।।
सामायिक प्रतिक्रमण एवं, स्वाध्याय आदि में सदा मगन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।२६।।
ॐ ह्रीं श्री आवश्यकनिरतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ शिष्यों पर समुचित अनुग्रह, करने वाली माँ को वंदन।
है चुम्बकीय व्यक्तित्व तथा, वात्सल्यपूर्ण गुरु अनुशासन।।
ज्ञानामृत की घूंटी से ये, शिष्यों का करतीं सदा सृजन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।२७।।
ॐ ह्रीं श्री शिष्यानुग्रहप्रवीणायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ सभी वर्ग को हित का मार्ग, बताती हैं जो उन्हें नमन।
व्यसनों का त्याग कराने वाली, ज्ञानमती माँ को वन्दन।।
इनकी यात्राओं से मानव, शाकाहारी बन गये स्वयं।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।२८।।
ॐ ह्रीं श्री हितोपदेशिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ धर्ममार्ग से विचलित को, स्थिर करतीं जो उन्हें नमन।
संघर्ष झेलकर भी पतितों को, सदा बनातीं जो पावन।।
अपकार करे कोई कितना, फिर भी करतीं उनका सिंचन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।२९।।
ॐ ह्रीं श्री स्थितिकरणांगधारिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ शिष्यों के दोषों को प्रगट, न करतीं उन माँ को वन्दन।
प्रायश्चित्तादि विधी से उनकी, शुद्धि करें कह शान्त वचन।।
इस अपरिस्रावी गुण से शिष्यों, के हो जाते दोष शमन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।३०।।
ॐ ह्रीं श्री अपरिस्राविगुणसंयुक्तायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ पावन तप कौमार्य अवस्था, ब्रह्मचर्यव्रत तुम्हें नमन।
यह तप कितने संघर्षों का, क्षण में कर देता है खण्डन।।
नारी की कोमलता को तुम, दे रहीं चुनौती बन कुन्दन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।३१।।
ॐ ह्रीं श्री कौमार्यतपोयुक्तायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ इनकी तेजप्रभा जैसी, आभा न दिखी कहिं इन्हें नमन।
देखी प्रतिभाएं कई मगर, नहिं मिला मुझे यह आकर्षण।।
उत्तर भारत की इस प्रतिभा से, आलोकित चउविध उपवन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।३२।।
ॐ ह्रीं श्री अप्रतिमप्रतिभायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ चलती फिरती तीर्थ तुम्हारी, पादधूलि को भी वन्दन।
नारी की महिमा नारायण, सम भी कहते हैं विद्वज्जन।।
प्रभु भक्ति नाव से स्वपर जनों को, सदा तिरातीं तीरथ तुम।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।३३।।
ॐ ह्रीं श्री चैतन्यतीर्थस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ मुनि सुकुमाल समान काय, सुकुमारी माता तुम्हें नमन।
माता की ममता इसीलिए, रोती थी लख तुम कोमल तन।।
गर्मी सर्दी अरु क्षुधा तृषा की, फिर भी बाधा करी सहन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।३४।।
ॐ ह्रीं श्री सुकुमारिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ नियमसार स्याद्वादचंद्रिका, संस्कृतटीका को वंदन।
श्री कुंदकुंद कृत ग्रंथराज के, रत्नत्रय को किया ग्रहण।।
इस कलियुग में ऐसी टीकाकर्त्री का हम करते दर्शन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।३५।।
ॐ ह्रीं श्री नियमसारग्रंथस्य स्याद्वादचंद्रिकासंस्कृतटीकाकर्त्र्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ पुष्पदन्त के षट्खण्डागम, ग्रन्थ ज्ञानयुत तुम्हें नमन।
श्री भूतबली आचार्य रचित, सूत्रों पर सदा करें चिन्तन।।
श्री वीरसेन स्वामी विरचित, धवला टीका में रुची गहन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।३६।।
ॐ ह्रीं श्री षट्खंडागमज्ञानसंयुक्तायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ षट्खण्डागम की संस्कृत, टीका रचयित्री को वन्दन।
चिन्तामणि सम फल देने वाली, यह इस युग की कृती प्रथम।।
श्री वीरसेन आचार्य सदृश, सिद्धान्त ज्ञान का भाव प्रबल।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।३७।।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धांतचिंतामणिटीकाकर्त्र्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ सैद्धान्तिक ग्रन्थों की माता, चक्रेश्वरि माँ तुम्हें नमन।
श्रुतज्ञानावरणी कर्मक्षयोपशम, से कर पाईं ज्ञानार्जन।।
है वर्तमान गौरवशाली, पाकर ज्ञानी माता सा धन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।३८।।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धान्तचक्रेश्वर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ दो सौ ग्रन्थों की रचनाकर्त्री माता को शत वन्दन।
प्रारंभ हुआ प्रभु सहस्त्रनाम, मंत्रों से जिनका शुभ लेखन।।
बालक विद्वान युवा नारी, सबको जिनकी कृतियाँ अनुपम।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।३९।।
ॐ ह्रीं श्री द्विशतग्रन्थरचनाकर्त्र्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ शरदपूर्णिमा की संपूर्ण, कला संयुत माँ तुम्हें नमन।
ज्ञानामृत से परिपूर्ण ज्ञान की, अमिट चाँदनी तुम्हें नमन।।
माँ मोहिनि ने कन्या पाकर, अपना मातृत्व किया था धन्य।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।४०।।
ॐ ह्रीं श्री पूर्णशशिकलायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ वर्तमान में अंगज्ञान नहिं, अंशज्ञानयुत मात नमन।
चारों अनुयोगों में निबद्ध, जिनवाणी का करतीं चिन्तन।।
वह द्वादशांग का अंश आज, साकार कर रही हो माँ तुम।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।४१।।
ॐ ह्रीं श्री अंगांशश्रुतधारिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ वीरसिन्धु की परम्परा, रक्षण करतीं माँ तुम्हें नमन।
अपने गुरुवर की शिक्षा का, जीवन में सदा किया पालन।।
यह पावन परम्परा हम सबके, जीवन को भी करे चमन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।४२।।
ॐ ह्रीं श्री गुरुपरम्परारक्षिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ पाठक उपाध्याय सम हे, माता पाठिका तुम्हें वन्दन।
शिष्यों को पढ़ा पढ़ा करके, स्वयमेव कर लिया ज्ञानार्जन।।
इस युग की सरस्वती कहते, जिनको इस युग के विद्वज्जन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।४३।।
ॐ ह्रीं श्री पाठिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ भव्यों का अज्ञान तिमिर, हरने वाली माँ तुम्हें नमन।
अपने प्रवचन के माध्यम से, करती हो सबका मन पावन।।
स्याद्वाद सूर्य से आलोकित, मस्तिष्क ज्ञान का है उपवन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।४४।।
ॐ ह्रीं श्री अज्ञानतिमिरविनाशकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ धरती माता के समान, हो क्षमाशालिनी तुम्हें नमन।
पूजक निंदक दोनों के प्रति, समताधारी माँ तुम्हें नमन।।
इनके प्रयत्न से जगह-जगह, संघर्ष प्रेममय बनते मन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।४५।।
ॐ ह्रीं श्री क्षमाशालिन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ शुभ कार्यों में दृढ़संकल्पी, ज्ञानमूर्ति माँ तुम्हें नमन।
संघर्षों में भी नहीं डिगीं, मेरू सम अचल रहीं हरदम।।
मानो उस दृढ़ता का प्रतीक, साकार सुमेरू नन्दन वन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।४६।।
ॐ ह्रीं श्री दृढ़संकल्पिन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ शुक्लभावयुत श्वेतवस्त्र, धारण करतीं माँ तुम्हें नमन।
बस एक वस्त्र के द्वारा मूल-गुणों का करती हो पालन।।
देवी सी मनमोहक मुद्रा, दिखता चेहरे पर तेज प्रबल।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।४७।।
ॐ ह्रीं श्री श्वेतवस्त्रधारिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ संयम का उपकरण मोर, पिच्छीधारी माँ तुम्हें नमन।
बिन पिच्छी के निर्वाण नहीं, श्री कुन्दकुन्द के यही वचन।।
इस भव में स्त्रीलिंग छिदेगा, परभव में हो मोक्ष गमन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।४८।।
ॐ ह्रीं श्री मयूरपिच्छिकासहितायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ जिनवर वाणी से चिन्हित, ग्रन्थों को पढ़तीं तुम्हें नमन।
जो सदा पढ़ें या लिखें उन्हें ही, कहें ज्ञानमति श्रावकजन।।
ग्रन्थों के सागर से चुन चुन कर, देती हो मोती अनुपम।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।४९।।
ॐ ह्रीं श्री जिनवाणीचिन्हितायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ज्ञानकीर्ति का दिग्दर्शक, ध्वजचिन्ह सहित माँ तुम्हें नमन।
करतल की रेखाओं में वह ध्वज, बना हुआ है सुन्दरतम।।
निज अगणित कार्यकलापों से, पाती हो दुनियाँ में वन्दन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।५०।।
ॐ ह्रीं श्री ध्वजचिन्हसमन्वितायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ जन्मकुंडली राजयोग, गुण दर्शाती माँ तुम्हें नमन।
राजाओं को भी धर्मनीति, सिखलातीं माता तुम्हें नमन।।
तुमसे लें आशीर्वाद केन्द्र एवं प्रादेशिक नेतागण।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।५१।।
ॐ ह्रीं श्री राजयोगगुणसमन्वितायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ सभी आर्यिका माताओं में, शिरोमणी माँ तुम्हें नमन।
अपनी आगमचर्या से तुम, करती हो सबका निर्देशन।।
संगोष्ठी शिविर विधान आदि से, करवाती हो ज्ञानार्जन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।५२।।
ॐ ह्रीं श्री आर्यिकाशिरोमणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ न्यायप्रभाकर पदवी युत, हे ज्ञानमती माँ तुम्हें नमन।
वर अष्टसहस्त्री न्यायसार, आदिक ग्रन्थों का किया सृजन।।
अन्यायमयी कलियुग में तुमने, किया न्याय रवि का प्रगटन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।५३।।
ॐ ह्रीं श्री न्यायप्रभाकरपदव्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ शान्तहृदययुत परमशांत, मुद्राधारी माँ तुम्हें नमन।
है मन्द मन्द मुस्कान तुम्हारी, मुद्रा का अति आकर्षण।।
वे शान्तमयी परमाणु जगत में, फैलाते हैं शांति परम।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।५४।।
ॐ ह्रीं श्री शांतमुद्राधारिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ परमसाधिका की भावी, पर्याय सिद्ध को करूँ नमन।
इक दिन तो सिद्ध बनेंगी ही, जब आज मिला सम्यग्दर्शन।।
है शक्तिरूप से सब जीवों की, आत्मा सिद्धस्वरूप शिवम्।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।५५।।
ॐ ह्रीं श्री परंपरापर्यायसिद्धसमन्वितायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ आत्मा के भव्यत्व स्वगुण से, सहित मात को नित वन्दन।
सम्मेदशिखर के वन्दन से, हो गई परीक्षा सर्वोत्तम।।
यह भाव पारिणामिक आत्मा में, होता है साकार स्वयम्।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।५६।।
ॐ ह्रीं श्री भव्यत्वगुणसहितायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ हे श्रुतज्ञानदिवाकर तेरी, ज्ञानप्रभा को करूँ नमन।
नहिं आज कोई विद्वान् जगत में, दिखता है हे माँ! तुम सम।।
आगम के दर्पण में हर शंका, का उत्तर मिलता प्रतिक्षण।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।५७।।
ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञानदिवाकरप्रभायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ प्रथम पट्ट आचार्य वीरसागर शिष्या को करूँ नमन।
चारित्रचक्रवर्ती शान्तीसागर की आज्ञा का प्रतिफल।।
इन प्रथम बालसति के गुरुवर को, शत-शत बार करूँ वन्दन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।५८।।
ॐ ह्रीं श्री वीरसागराचार्यस्यशिष्यायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ इतिहासों की निर्मात्री, युगप्रमुख मात तुमको वन्दन।
हे माँ तेरे उपकारों को, जगती न चुकाने में सक्षम।।
युग के सूरज चन्दा तारे, तेरी छवि देख रहे स्वर्णिम।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।५९।।
ॐ ह्रीं श्री युगप्रमुखायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ निज महिमा से सर्वविघ्न, हरने वाली माँ तुम्हें नमन।
भक्तों के तुम वन्दन से भी, होते परोक्ष में विघ्न शमन।।
मानो कोई दैवी शक्ती, भक्तों के करती रोग हरण।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।६०।।
ॐ ह्रीं श्री विघ्नसंहारिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ आर्षमार्ग जिनवरप्रणीत, बतलातीं माता तुम्हें नमन।
उसका न उलंघन किया कभी, ज्ञानी का यह लक्षण अनुपम।।
अपनी वंशावलि में तुमने, शास्त्रीय मार्ग ही किया चमन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।६१।।
ॐ ह्रीं श्री आर्षमार्गसंवाहिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ शीघ्र ग्रहण करने वाली, हे सरस्वती माँ तुम्हें नमन।
जग को पहचान न पातीं पर, निज को पहचान रही हो तुम।।
इक बार ग्रन्थ यदि देख लिया, तो धारण कर लेतीं निजमन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।६२।।
ॐ ह्रीं श्री उत्तमधारणाशक्तिसमन्वितायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ द्वादशांग सिद्धान्त कहा है, कल्पवृक्ष सुंदर उपवन।
उसकी ही एक कली बनकर, प्रगटाती हो तुम ज्ञान विमल।।
उस ज्ञानप्रभा के द्वारा तुम, करतीं सैद्धान्तिक ग्रंथ सृजन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।६३।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धान्तकल्पतरुकलिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ऋषभदेव के समवसरण का, श्रीविहार करवाया तुम।
आशीर्वाद लेकर प्रधानमंत्री ने किया प्रवर्तन रथ।।
हुआ भारतभ्रमण पुनः प्रयाग, तीरथ पर उसका स्थापन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।६४।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवसमवसरणश्रीविहार प्रेरिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ऋषभदेव दीक्षाभूमी, तीरथ प्रयाग को किया चमन।
वटवृक्ष तले ध्यानस्थ जहाँ, प्रभु खड्गासन प्रतिमा अनुपम।।
प्रभु समवसरण एवं कैलाशगिरी को वंदन करूँ प्रथम।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।६५।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरऋषभदेवदीक्षास्थलीप्रयागतीर्थप्रणेत्र्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव, की प्रेरिका तुम्हें वंदन।
सन् दो हजार में प्रधानमंत्री, द्वारा हुआ था उद्घाटन।।
तब देश विदेशों में फैला, प्राचीन अनादी जिनशासन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।६६।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवस्यअन्तर्राष्ट्रीयनिर्वाणमहोत्सव सम्प्रेरिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ महावीर ज्योती रथ की, पावन प्रेरिका तुम्हें वंदन।
प्रभु वीर जन्मभूमी कुण्डलपुर, का संदेश दिया सुंदर।।

हर नगर गली में गूंज उठी, प्रभु वर्धमान की जय जय ध्वनि।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।६७।।

ॐ ह्रीं श्री भगवानमहावीरज्योतिरथप्रवर्तन सम्प्रेरिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ कुण्डलपुर तीरथ विकास की, सम्प्रेरिका तुम्हें वंदन।
प्रभु के छब्बिससौवें जन्मोत्सव, को सार्थक कर दिया नमन।।
मंदिर के संग संग बना जहाँ, इक सुंदर नंद्यावर्त महल।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।६८।।

ॐ ह्रीं श्री भगवानमहावीरजन्मभूमि कुण्डलपुर विकासिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ चौबिस तीर्थंकर की सोलह, जन्मभूमियों को वंदन।
उन सब तीर्थों का हो विकास, उपदेश करें यह मात नमन।।
कितनी ही जन्मभूमियों को, करवाया तुमने स्वयं चमन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।६९।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरजन्मभूमिविकास सम्प्रेरिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ मांगीतुंगी पर्वत के, श्री ऋषभदेव को करूँ नमन।
इक सौ अठ फिट प्रतिमा जी की, निर्माण प्रेरणा है अनुपम।।
ये सब निधियाँ मिलतीं जग को, तुम ध्यान प्रेरणा के कारण।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।७०।।

ॐ ह्रीं श्री मांगीतुंगीसिद्धक्षेत्रशताष्टफुटोन्नतऋषभदेवप्रतिमानिर्माण सम्प्रेरिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ शिष्याओं को दीक्षा देने, वाली गणिनी तुम्हें नमन।
उनमें से इक चन्दनामती, शिष्या ने पाया सम्बोधन।।

कितनी शिष्याओं को गुरु से, दीक्षाएं दिलवाईं अनुपम।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।७१।।
ॐ ह्रीं श्री दीक्षाप्रदायिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ अखिल विश्व में जिनसंस्कृति, फैलाती हो माँ! तुम्हें नमन।
दिल्लीवासी भक्तों ने विश्व-विभूती कह कर किया नमन।।
ऐसी विभूतियाँ कभी-कभी, लेती हैं इस धरती पे जनम।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।७२।।
ॐ ह्रीं श्री विश्वविभूतिपदवीसमन्वितायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ऐसी तपस्विनी माता से, राष्ट्र सदा होता पावन।
भौतिकता में आध्यात्मिकता का, जिनसे मिलता आस्वादन।।
इसलिए राष्ट्रगौरव उपाधि दे, महाराष्ट्र ने किया नमन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।७३।।
ॐ ह्रीं श्री राष्ट्रगौरवअभिनंदनयुक्तायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ कलियुग की शारदमाता, हे ज्ञानमती माँ! तुम्हें नमन।
आरा समाज के भक्तों ने, कर लिया निधी का मूल्यांकन।।
वाग्देवी पद से अभिनन्दन कर, किया मातपद में वन्दन।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।७४।।
ॐ ह्रीं श्री वाग्देवीपदवीअलंकृतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माँ, मैं तुम चरणों में करूँ नमन।
धरती अम्बर सूरज तारे, कर रहे तुम्हारा अभिनन्दन।।
युग युग तक तुम जीवन्त रहो, इस साधुजगत की आभूषण।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो यह अर्घ्य सुमन।।७५।।
ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमती मात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

ॐ ज्ञानमती से गणिनिप्रमुख तक, सभी विशेषण हैं सार्थक।
हे माधोराजपुरा में दीक्षित, युगनायिका तुम्हें वन्दन।।
आर्यिका रूप में वर्ष पचास भी, पार किये तुमने स्वर्णिम।
हे गणिनी माता ज्ञानमती, स्वीकार करो पूर्णार्घ्य सुमन।।७६।।
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमत्यादिगणिनीप्रमुखपर्यन्तपंचसप्ततिविशेषणसमलंकृतायै पूज्य युगनायिकाआर्यिकाशिरोमणिश्रीज्ञानमतीमात्रे पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र — ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानप्राप्तये गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे नमः।

(सुगंधित पुष्प, लवंग या पीले चावल से पुष्पांजलि करें।)

जयमाला

दोहा

ज्ञानमती को नित नमूँ, ज्ञान कली खिल जाय।
ज्ञानज्योति की चमक में, जीवन मम मिल जाय।।

धुन-नागिन-मेरा मन डोले.....।

हे बालसती, माँ ज्ञानमती, हम आए तेरे द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।
शरद पूर्णिमा दिन था सुन्दर, तुम धरती पर आईं।
सन् उन्निस सौ चौंतिस में माँ, मोहिनि जी हर्षाईं।। माता...।।
थे पिता धन्य, नगरी भी धन्य, मैना के इस अवतार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।१।।

बाल्यकाल से ही मैना के, मन वैराग्य समाया।
तोड़ जगत के बंधन सारे,छोड़ी ममता माया।। माता....।।

गुरु संग मिला, अवलम्ब मिला, पग बढ़े मुक्ति के द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।२।।

शान्तिसिन्धु की प्रथम शिष्यता, वीरसिन्धु ने पाई।
उनकी शिष्या ज्ञानमती जी ने ,ज्ञान की ज्योति जलाई।। माता....।।
शिवरागी की, वैरागी की, ले दीप सुमन का थाल रे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।३।।

माता तुम आशीर्वाद से, जम्बूद्वीप बना है।
हस्तिनापुर की पुण्यधरा पर, कैसा अलख जगा है।। माता....।।
ज्ञान ज्योति चली, जग भ्रमण करी, तेरे ही ज्ञान आधार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।४।।

तीर्थ अयोध्या-मांगीतुंगी, का विकास करवाया।
फिर प्रयाग में तपस्थली का, नूतन तीर्थ बनाया।। माता.....।।
प्रभु समवसरण, रथ हुआ भ्रमण, श्री ऋषभदेव के नाम का,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।५।।

कुण्डलपुर तीरथ विकास की, नई प्रेरणा आई।
महावीर की जन्मभूमि में, अगणित खुशियाँ छाईं।। माता...।।
महावीर ज्योति, रथ से उद्योत, कर दिया पुनः संसार को,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।६।।

तीर्थंकर की जन्मभूमियों, का विकास करवाया।
पार्श्वनाथ के उत्सव का फिर, तुमने बिगुल बजाया।। माता.....।।
संदेश दिया, उपदेश दिया, भावना हुई साकार है,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।७।।

यथा नाम गुण भी हैं वैसे, तुम हो ज्ञान की दाता।
तुम चरणों में आकर के हर, जनमानस हर्षाता।।माता....।।
साहित्य सृजन, श्रुत में ही रमण, कर चलीं स्वात्म विश्राम पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।८।।

गणिनी माता के चरणों में, यही याचना करते ।
कहे ''चन्दनामती'' ज्ञान की , सरिता मुझमें भर दे।।माता.....।।
ज्ञानदाता की, जगमाता की, वन्दना करूँ शतबार मैं,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।९।।

दोहा

लोहे को सोना करे, पारस जग विख्यात।
तुम जग को पारस करो, स्वयं ज्ञानमति मात।।१०।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभुछंद

जो गणिनी ज्ञानमती माता की, करें महापूजा रुचि से।
वे ज्ञानामृत से निज मन को, पावन कर अभिसिंचित करते।।
इस शरदपूर्णिमा के चन्दा की, ज्ञानरश्मियाँ बढ़ें सदा।
''चन्दनामती'' युग युग तक यह, आलोक जगत को मिले सदा।।

इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः

गणिनी ज्ञानमती माताजी की वैराग्य भावना

दोहा

सिद्ध हुए जो भी मनुज, कर्म अरी को जीत।
उनके पद को नमन कर, करूँ सिद्धि से प्रीत।।१।।

भव भव की जो भावना, भाई इस भव माँहि।
वही सफल हो कामना, हो भव का भ्रम नाहिं।।२।।

शेर छंद

संसार के दुख से हुए भयभीत जो प्राणी।
उनके लिए हितकारि प्रभु जिनेन्द्र की वाणी।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।३।।

नारी व नर सभी की आतमा है एक सी।
सबमें छिपी भगवान आतमा है एक सी।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।४।।

कुछ पूर्व के संस्कार से वैराग्य मिल गया।
पुरुषार्थ के निमित्त सोया भाग्य खिल गया।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।५।।

संसार को तज सकते हैं संसार में रह कर।
जीवन के किसी क्षण में भी वैराग्य ग्रहण कर।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।६।।

माँ को दहेज में मिले इक ग्रंथ को पढ़ा।
जिससे हृदय में ज्ञान औ वैराग्य था बढ़ा।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।७।।

संसार में अनादिकाल से भ्रमण हुआ।
अब पुण्य से जिनधर्म का अवलम्ब मिल गया।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।८।।

माता-पिता भाई बहन कोई न हैं अपने।
सोचो तो सभी लोग हैं संसार के सपने।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।९।।

जग में प्रसिद्ध लोक मूढ़ताओं को रोका।
है कर्म का सिद्धान्त अटल शेष सब धोखा।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।१०।।

प्रभु भक्ति से टल सकती है अकाल मृत्यु भी।
समझाया सबको इसके सिवा व्यर्थ है सभी।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।११।।

पग पंक में रख धोने से अच्छा है न रखना।
सोचा यही भव पंक में पग ही नहीं रखना।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।१२।।

अकलंक के नाटक से ग्रहण की यही शिक्षा।
गृहपंक को तज ले ली ब्रह्मचर्य की दीक्षा।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।१३।।

आगे बढ़ीं तो ज्ञानमती मात बन गईं।
इस युग की प्रथम बाल ब्रह्मचारिणी हुईं।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।१४।।

कुछ पूर्व पुण्य से अगाध ज्ञान मिल गया।
स्वयमेव कठिन ग्रंथों का अनुवाद कर दिया।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।१५।।

चाहे बनाओ शिष्य या तीरथ विकास हो।
संयम पले निर्विघ्न तो सब कुछ ही सार्थ हो।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।१६।।

चारित्र चक्रवर्ति शांतिसिंधु से लेकर।
देखा है सात पीढ़ियों से संघ चतुर्विध।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।१७।।

कलियुग में त्याग मार्ग है यद्यपि बहुत कठिन।
होता है तो भी साधु और साध्वी का दर्शन।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।१८।।

है त्याग से पवित्र जिनकी काया का कण-कण।
सब लाभ लेते उनकी तपस्या का प्रतिक्षण।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।१९।।

जिनकी चरणरज से धरा बनती है स्वर्ण सम।
जिन प्रेरणा से होता है जंगल में भी मंगल।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।२०।।

जीवन से जिनके सीखना है त्याग तपस्या।
जो हैं प्रसिद्ध बीसवीं सदी की विशल्या।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।२१।।

प्रभु नाम जिनके रोम-रोम में है समाया।
प्रभु नाम को ही जिनने विश्व भर में गुंजाया।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।२२।।

उन ज्ञानमती मात को शत-शत नमन करूँ।
उनके चरण में ''चन्दनामती'' सुमन धरूँ।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।२३।।

दोहा

यह वैरागी भावना, पढ़ो भव्य मन लाय।
फिर विराग की साधना, करो चित्त हरषाय।।२४।।

ज्ञानामृत पताका

—शंभु छंद—

तीर्थंकर दिव्यध्वनि प्रतीक, जिनवाणी माँ को नमन करूँ।
ब्राह्मी से चन्दनबाला तक, सब गणिनी माता को भी नमूँ।।
उनकी प्रतिकृति गणिनी माता, श्री ज्ञानमती जी को वन्दूँ।
अज्ञान तिमिर को दूर भगा, मैं सम्यग्ज्ञान प्राप्त कर लूँ।।१।।

—दोहा—

ज्ञानपताका मैं लिखूँ, निज मन निर्मल हेत।
पढ़ने वालों को मिले, ज्ञानामृत की भेंट।।२।।
सरस्वती सम ज्ञान है, ब्राह्मी सम चारित्र।
इनके नाम स्मरण से, होता हृदय पवित्र।।३।।

—सखी छंद—

हे ज्ञानमती जी माता, गणिनी तुम जगविख्याता।।४।।
इस युग की पहली बाला, संयम धर किया उजाला।।५।।
शुभ तीर्थ अयोध्या निकट में, इक ग्राम टिकैतनगर है।।६।।
वहाँ छोटेलाल की पत्नी, मोहिनी की कुक्षि से जन्मीं।।७।।
सन् उन्निस सौ चौंतिस की, तिथि शरदपूर्णिमा निशि थी।।८।।
नभ में जब चन्द्र उदित था, नौ बजकर पन्द्रह मिनट था।।९।।
उस गृह उपवन में पहला, आया था चाँद रुपहला।।१०।।
किरणें निकली थीं अलौकिक, हुआ प्रसूतिगृह आलोकित।।११।।
नानी ने प्यार जताया, मैना यह नाम बताया।।१२।।
मैना का ज्ञान सुधाकर, बचपन में ही संग आकर।।१३।।
घर का मिथ्यात्व भगाया, सबको सम्यक्त्व सिखाया।।१४।।
पढ़ी सतियों की जो कहानी, तब ब्रह्मचर्य की ठानी।।१५।।
संघर्ष झेलकर पाया, गुरु देशभूषण की छाया।।१६।।
सन् उन्निस सौ बावन की, वही शरदपूर्णिमा तिथि थी।।१७।।
सप्तम प्रतिमा ले डाली, गृहत्याग किया निधि पा ली।।१८।।
सारा कुटुम्ब रोया था, यह मन निज में खोया था।।१९।।
फिर उन्नीस सौ त्रेपन में, तिथि चैत्र कृष्ण एकम में।।२०।।
श्री महावीर जी तीरथ, पर अमर हुई तुम कीरत।।२१।।
क्षुल्लिका वीरमति बनकर, इस बालयोगिनी को लख।।२२।।
जन-जन आश्चर्यचकित था, इन आगे नतमस्तक था।।२३।।
दो चौमासे गुरु संग में, किये अध्ययन और मनन में।।२४।।
फिर गुरुवर की आज्ञा से, अम्मा विशालमति संग में।।२५।।
दक्षिण भारत में जाकर, दर्शन किये शान्तीसागर।।२६।।
उनसे सम्बोधन पाया, त्यागी जीवन महकाया।।२७।।
आचार्य समाधी देखी, कुंथलगिरि पर जो हुई थी।।२८।।
उनकी आज्ञा जो मिली थी, अन्तर की कली खिली थी।।२९।।
मुझ शिष्य वीरसागर से, दीक्षा लेना जा करके।।३०।।
उनका आदेश निभाया, मिली वीरसिंधु की छाया।।३१।।
वे पट्टाचार्य प्रथम थे, छत्तीस गुणों से युत थे।।३२।।
इस प्रतिभाशाली शिष्या, को देख कही इक शिक्षा।।३३।।
तुम प्रथम बालसति बनकर, दिखलाना ब्राह्मी का पथ।।३४।।
सन् उन्निस सौ छप्पन में, वैशाख कृष्ण दुतिया थी।।३५।।
श्री माधोराजपुरा की, धरती माँ भी पुलकित थी।।३६।।
लघु शिष्या के मस्तक पर, गुरु ने संस्कार किये जब।।३७।।
शुभ नाम ज्ञानमति पाया, आर्यिका का पद अपनाया।।३८।।
जय जय से गूँज उठा नभ, सुकुमारी का लखकर तप।।३९।।
जीवित थे मात-पिता सब, लेकिन न पता था उन्हें तब।।४०।।
मेरी कन्या जगमाता, बनकर हो रही विख्याता।।४१।।
पितु सह कुटुम्ब सब रोया, पर माँ ने धैर्य न खोया।।४२।।

बोली अब फर्ज निभाओ, पुत्री का दर्श कराओ।।४३।।
आहार उन्हें मैं दूँगी, सेवा कर तृप्ति करूँगी।।४४।।
प्रतिवर्ष माह पन्द्रह दिन, चौका करते थे निश दिन।।४५।।
माँ ज्ञानमती की महिमा, बढ़ रही ज्ञान की गरिमा।।४६।।
बहुते आर्यिका मुनी को, अध्ययन कराया उनको।।४७।।
शिवसिंधु सूरि के संघ में, श्री धर्म सिंधु के मन में।।४८।।
इनके प्रति गुणग्राहकता, थी खूब ज्ञानवत्सलता।।४९।।
साहित्य सृजन कर इनने, इतिहास बनाया प्रथम था।।५०।।
दो सौ ग्रंथों की रचना, षट्खण्डागम पर लिखना।।५१।।
पूर्वाचार्यों की संस्मृति, आती है लख इनकी कृति।।५२।।
हस्तिनापुरी तीरथ पर, जम्बूद्वीप प्रेरणा देकर।।५३।।
वहाँ मंदिर कई बनाए, नव नव निर्माण कराए।।५४।।
बना स्वर्ग सरीखा उपवन, कैसे करूँ उसका वर्णन।।५५।।
जाकर के अयोध्या तीरथ, फैलाया दुनिया में यश।।५६।।
फिर मांगीतुंगी जाकर, वहाँ पंचकल्याण कराकर।।५७।।
संघर्ष व विघ्न निवारे, अनहोने कार्य संवारे।।५८।।
इन यात्राओं के मधि में, कई तीरथ और नगर में।।५९।।
कई नव निर्माण बताए, शिलान्यास अनेकों कराए।।६०।।
कहीं समवसरण, सिद्धाचल, कहीं बनेगा सम्मेदाचल।।६१।।
ॐकारगिरी कैलाशं, णमोकार धाम कमलासन।।६२।।
कहीं तीन चौबीसी प्रतिमा, कहीं बीस तीर्थंकर रचना।।६३।।
कहीं कल्पवृक्ष बनवाया, कहीं ह्रीं मंत्र रचवाया।।६४।।
मांगीतुंगी तीरथ पर, ''चंदना'' कमल का मंदिर।।६५।।
वहाँ सहस्त्रकूट की प्रतिमा, खड्गासन बनीं अनुपमा।।६६।।
प्रभु ऋषभदेव की महिमा, फैलाई पूर्ण जगत मा।।६७।।
कई उत्सव रचवाने की, प्रेरणा आपने दीनी।।६८।।

—शंभु छंद—

इस ज्ञानमती की ज्ञान पताका, को पढ़ना श्रद्धा रुचि से।
अज्ञान तिमिर के क्षय करने की, युक्ती आएगी इससे।।
श्रुतज्ञानावरण क्षयोपशम हो, क्रम से सम्यक् श्रुतज्ञान वरो।
शुभ में उपयोग लगा करके, शुद्धोपयोगमय ध्यान करो।।६९।।
आचार्य कई इनको कहते, यह तो इस युग की विशल्या है।
इनके हाथों की ध्वजरेखा, कहती यह पुण्य की महिमा है।।
इनकी पावनता के समक्ष, स्वयमेव विघ्न भग जाते हैं।
हर दुर्लभ कार्य सुलभ होकर, कीर्तिध्वज को फहराते हैं।।७०।।
''चन्दनामती'' इनके गुण को, ये पंक्ति न सीमित कर सकतीं।
सागर की लहरों का वर्णन, ज्यों बाल बुद्धि नहीं कर सकती।।
प्रतिदिन यह पताका पढ़ने से, तुम ज्ञान पताका फैलेगी।
विद्यार्थी जीवन में इनका, संस्मरण प्रथम श्रेणी देगी।।७१।।

—दोहा—

श्रावण शुक्ला प्रतिपदा, तिथि में पूरण पाठ।
वीर संवत् पच्चीस सौ, बाइस है विख्यात।।१।।
हे मातः जब तक मुझे, मिले न केवलज्ञान।
तब तक तुम गुरु सन्निधी, में पाऊँ श्रुतज्ञान।।२।।

सप्ततिज्ञानमंत्राणि

अपने ज्ञान की वृद्धि हेतु निम्न मंत्रों का प्रतिदिन पाठ करें। विशेष रूप से आश्विन शुक्ला एकम से आश्विन शुक्ला पूर्णिमा तक (१५ दिन तक) शारदा पक्ष में इन मंत्रों का प्रातःकाल पाठ करने से ज्ञान में पूर्ण चन्द्रमा की तरह वृद्धि होगी।

अनुष्टुप

ज्ञानमत्यै नमस्तुभ्यं, वरदे ज्ञानदायिनि।
मंत्रारम्भं करिष्यामि, शुद्धिर्भवतु मे सदा।।१।।

१. ॐ ह्रीं ज्ञानमत्यै नमः
२. ॐ ह्रीं आर्यिकायै नमः
३. ॐ ह्रीं गणिन्यै नमः
४. ॐ ह्रीं जगन्मात्रे नमः
५. ॐ ह्रीं चारित्रचन्द्रिकायै नमः
६. ॐ ह्रीं युगप्रवर्तिकायै नमः
७. ॐ ह्रीं बालब्रह्मचारिण्यै नमः
८. ॐ ह्रीं वीरमत्यै नमः
९. ॐ ह्रीं सरस्वत्यै नमः
१०. ॐ ह्रीं तीर्थोद्धारिकायै नमः
११. ॐ ह्रीं वात्सल्यमूर्तये नमः
१२. ॐ ह्रीं उपचारमहाव्रतिकायै नमः
१३. ॐ ह्रीं रत्नत्रयधारिण्यै नमः
१४. ॐ ह्रीं उपचारषट्त्रिंशतमूलगुणधारिण्यै नमः
१५. ॐ ह्रीं पिण्डस्थध्यानसंयुक्तायै नमः
१६. ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगयुक्तायै नमः
१७. ॐ ह्रीं जबूद्वीपप्रेरिकायै नमः
१८. ॐ ह्रीं ज्ञानज्योतिप्रवर्तिकायै नमः
१९. ॐ ह्रीं विधानवाचस्पतये नमः
२०. ॐ ह्रीं साहित्यवारिधये नमः
२१. ॐ ह्रीं प्रथमग्रंथरचनाकर्त्र्यै नमः
२२. ॐ ह्रीं अष्टसहस्त्रीअनुवादिकायै नमः
२३. ॐ ह्रीं ज्ञानध्यानसमन्वितायै नमः
२४. ॐ ह्रीं सन्मार्गदर्शिकायै नमः
२५. ॐ ह्रीं ब्राह्मीपथप्रदर्शिकायै नमः
२६. ॐ ह्रीं आवश्यकनिरतायै नमः
२७. ॐ ह्रीं शिष्यानुग्रहप्रवीणायै नमः
२८. ॐ ह्रीं हितोपदेशिकायै नमः
२९. ॐ ह्रीं स्थितिकरणांगधारिकायै नमः
३०. ॐ ह्रीं अपरिस्राविगुणसंयुक्तायै नमः
३१. ॐ ह्रीं कौमार्यतपोयुक्तायै नमः
३२. ॐ ह्रीं अप्रतिमप्रतिभायै नमः
३३. ॐ ह्रीं चैतन्यतीर्थस्वरूपायै नमः
३४. ॐ ह्रीं सुकुमारिकायै नमः
३५. ॐ ह्रीं षट्खंडागमज्ञानसंयुक्तायै नमः
३६. ॐ ह्रीं सिद्धान्तचिन्तामणिटीकाकर्त्र्यै नमः
३७. ॐ ह्रीं सिद्धान्तचक्रेश्वर्यै नमः
३८. ॐ ह्रीं द्विशतग्रन्थरचनाकर्त्र्यै नमः
३९. ॐ ह्रीं पूर्णशशिकलायै नमः
४०. ॐ ह्रीं अंगांशश्रुतधारिकायै नमः
४१. ॐ ह्रीं गुरुपरम्परारक्षिकायै नमः
४२. ॐ ह्रीं पाठिकायै नमः
४३. ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरविनाशकायै नमः
४४. ॐ ह्रीं क्षमाशालिन्यै नमः
४५. ॐ ह्रीं दृढ़संकल्पिन्यै नमः
४६. ॐ ह्रीं श्वेतवस्त्रधारिण्यै नमः

४७. ॐ ह्रीं मयूरपिच्छिकासहितायै नमः
४८. ॐ ह्रीं जिनवाणीचिन्हितायै नमः
४९. ॐ ह्रीं ध्वजचिन्हसमन्वितायै नमः
५०. ॐ ह्रीं राजयोगगुणसमन्वितायै नमः
५१. ॐ ह्रीं आर्यिकाशिरोमणये नमः
५२. ॐ ह्रीं न्यायप्रभाकरपदव्यै नमः
५३. ॐ ह्रीं शांतमुद्राधारिण्यै नमः
५४. ॐ ह्रीं परम्परासिद्धपर्यायसमन्वितायै नमः
५५. ॐ ह्रीं भव्यत्वगुणसहितायै नमः
५६. ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानदिवाकरप्रभायै नमः
५७. ॐ ह्रीं वीरसागराचार्यस्यशिष्यायै नमः
५८. ॐ ह्रीं युगप्रमुखायै नमः
५९. ॐ ह्रीं विघ्नसंहारिकायै नमः
६०. ॐ ह्रीं आर्षमार्गसंवाहिकायै नमः
६१. ॐ ह्रीं सिद्धान्तकल्पतरुकलिकायै नमः
६२. ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवसमवसरणश्रीविहार प्रेरिकायै नमः।
६३. ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरऋषभदेवदीक्षास्थलीप्रयागतीर्थ प्रणेत्र्यै नमः।
६४. ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवस्यअन्तर्राष्ट्रीयनिर्वाणमहोत्सव सम्प्ररिकायै नमः।
६५. ॐ ह्रीं श्री भगवानमहावीर ज्योतिरथप्रवर्तन सम्प्रेरिकायै नमः।
६६. ॐ ह्रीं श्री भगवानमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुर विकासिकायै नमः।
६७. ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरजन्मभूमिविकास सम्प्रेरिकायै नमः।
६८. ॐ ह्रीं श्री मांगीतुंगीसिद्धक्षेत्रशताष्टफुटोन्नतऋषभदेव-
प्रतिमानिर्माण सम्प्रेरिकायै नमः।
६९. ॐ ह्रीं दीक्षाप्रदायिकायै नमः
७०. ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख ज्ञानमती मात्रे नमः

एतत्सप्ततिमंत्राणि, ये पठन्ति दिने दिने।
ते श्रुतज्ञानमायान्ति, चन्दनामतिरात्मनि।।१।।

भजन

तर्ज-पंखिड़ा.....

वंदना.....वंदना.....
वंदना करूँ मैं गणिनी ज्ञानमती की।
बीसवीं सदी की पहली बालसती की।।वंदना.....

इनके मात-पिता का, गुणानुवाद मैं करूँ।
इनकी जन्मभूमि का भी, साधुवाद मैं करूँ।।

मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वन्दना चरण में करके, पुण्य भरो जी।।वंदना...।।१।।

इनके ज्ञान की प्रशंसा, सारी दुनिया करती है।
इनके नाम की प्रशंसा, पुस्तकों में मिलती है।।

मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके, पुण्य भरो जी।।वंदना....।।२।।

वीर के युग की ये, लेखिका पहली हैं।
ढाई सौ ग्रंथों की, लेखिका साध्वी हैं।।

मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके, पुण्य भरो जी।।वंदना....।।३।।

इनके वात्सल्य में, माँ की ममता भरी।
इनके सानिध्य में, मुझको समता मिली।।

मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके, पुण्य भरो जी।।वंदना....।।४।।

इनके तप त्याग में, लाभ लेते सभी।
''चन्दना'' भाग्य से, भक्ति करते सभी।।

मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके, पुण्य भरो जी।।वंदना....।।५।।

भजन

तर्ज-फूलों सा चेहरा तेरा.....

इस युग की माँ शारदे, तू धर्म की प्राण है।
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।टेक.।।

महावीर प्रभु के शासन में अब तक,
कोई भी नारी न ऐसी हुई।
साहित्य लेखन करने की शक्ति,
तुझमें न जाने कैसे हुई।।
शास्त्र पुराणों में, भक्ति विधानों में, तेरा प्रथम नाम है विश्व में-२
कलियुग की माँ भारती, पूनो का तू चांद है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग.....।।१।।

तीर्थंकरों की जन्मभूमि का,
उत्थान माता तुमने किया।
हस्तिनापुरी में जंबूद्वीप को,
साकार माता तुमने किया।।
तीर्थ अयोध्या की, कीर्ति प्रसारित की, मस्तकाभिषेक आदिनाथ का हुआ-२
तू जग की वागीश्वरी, धरती का सम्मान है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग.....।।२।।

गणिनी शिरोमणि तेरी तपस्या,
का लाभ इस वसुधा को मिला।
चारित्र चक्री गुरु के सदृश ही,
''चंदना'' इक पुष्प जग में खिला।
पुष्प महकता है, चाँद चमकता है, ज्ञानमती माता के रूप में-२
युग युग तू जीती रहे, हम सबके अरमान हैं,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग.....।।३।।

वन्दना-गीत

हे ज्ञानमूर्ति माँ ज्ञानमती, तव ज्ञानकिरण यदि पा जाऊँ।
अज्ञान अंधेरा दूर भगा, निज ज्ञानज्योति को प्रगटाऊँ।।

भारत इक था गुलजार चमन, हिंसा ने उसको नष्ट किया।
सच्चाई के इस उपवन को, स्वार्थी तत्त्वों ने भ्रष्ट किया।।

ऐसी शक्ती मैं प्रगट करूँ, जो विश्वशांति को ला पाऊँ।
अज्ञान अंधेरा दूर भगा, निज ज्ञानज्योति को प्रगटाऊँ।।१।।

उपकार करूँ सारे जग का, यह भाव हृदय में आता है।
दुःखियों को देख हृदय रोता, मन करुणा से भर जाता है।।

दो शक्ति मुझे मैं सब जग का, दुःख दूर स्वयं ही कर पाऊँ।
अज्ञान अंधेरा दूर भगा, निज ज्ञानज्योति को प्रगटाऊँ।।२।।

भगवान न यदि बन सकूँ तो मैं, इन्सान की श्रेणी पा जाऊँ।
यदि साधु नहीं बन सकूँ तो मैं, सज्जन की श्रेणी पा जाऊँ।।

निज पर को ही ''चन्दनामती'', मैं सज्जनता सिखला पाऊँ।
अज्ञान अंधेरा दूर भगा, निज ज्ञानज्योति को प्रगटाऊँ।।३।।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की मंगल आरती

तर्ज-कभी राम बनके.....

भक्ति भाव लेकर, दीपक थाल लेकर,
गणिनी माता की आरती करें हम।।टेक।।
तुम ज्ञानमती कहलाईं,
तुम बालसती बन आईं,
दीपक हाथ लेकर, सबको साथ लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।१।।

इतिहास की तुम निर्मात्री,
कई तीर्थों की प्रेरणाप्रदात्री,
नई याद लेकर, फरियाद लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।२।।

जम्बूद्वीप बना है धरा पर,
जिससे चमक रहा हस्तिनापुर,
वही याद लेकर, भक्ति साथ लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।३।।

मांगीतुंगी अयोध्या में जाकर,
किया निर्माण नूतन वहाँ पर,
वही याद लेकर, भक्ति साथ लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।४।।

पुनः तीरथ प्रयाग बनाया,
ऋषभ जिनवर का नाम गुंजाया,
पुण्यधाम लेकर, तेरा नाम लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।५।।

वीर जन्मभूमि का यश बढ़ाया,
कुण्डलपुर का विकास कराया,
श्रुत का सार लेकर, आधार लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।६।।

तुम युग-युग जिओ मेरी माता,
''चन्दना'' गाएँ सब तेरी गाथा,
श्रद्धाभाव लेकर, दीपक थाल लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।७।।

आरती पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की

तर्ज-माई रे माई.....

गणिनी माता ज्ञानमती की, आरति है सुखकारी।
इनके दर्शन से नश जाता, मोहतिमिर भी भारी।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।
धन्य टिकैतनगर की धरती, जन्म हुआ जहाँ इनका।
छोटेलाल पिता माँ मोहिनी, शरदपूर्णिमा दिन था।।
अमृत झरता था चन्दा से.....
अमृत झरता था चन्दा से, खिली चांदनी प्यारी।
इनके दर्शन से नश जाता, मोहतिमिर भी भारी।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।१।।
ब्राह्मी चन्दनबाला का, मारग अपनाया माता।
साधू पद धारण कर तुमने, तोड़ा जग से नाता।।
सारी वसुधा बनी कुटुम्बी.....
सारी वसुधा बनी कुटुम्बी, महिमा तेरी निराली।
इनके दर्शन से नश जाता, मोहतिमिर भी भारी।।
बोलो जय जय जय बोलो जय जय जय ।।२।।
ग्रंथों की रचना में तुमने, नव इतिहास बनाया।
ऋषभदेव के समवसरण का, भारत भ्रमण कराया।।
हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की.....
हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की, रचना है अति प्यारी।
इनके दर्शन से नश जाता, मोहतिमिर भी भारी।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।३।।
तीर्थ अयोध्या मांगीतुंगी, का विकास करवाया।
फिर प्रयाग अरु कुण्डलपुर में, नवनिर्माण कराया।।
युग प्रवर्तिका प्रमुख आर्यिका.....
युग प्रवर्तिका प्रमुख आर्यिका, छवि तेरी अति प्यारी।
इनके दर्शन से नश जाता, मोहतिमिर भी भारी।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।४।।
ऐसी माता से धरती का, आंचल होय न सूना।
युग-युग तक 'चन्दना' अमर हो, यह प्राचीन नमूना।।
इनमें दिखती सरस्वती की.....
इनमें दिखती सरस्वती की, पावन मूरति प्यारी।
इनके दर्शन से नश जाता, मोहतिमिर भी भारी।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।५।।